ग्रामीण क्षेत्र भारत की आकांक्षाओं का प्रमुख इंजन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

ट्रांसफॉर्म रूरल इंडिया (टीआरआई) द्वारा आयोजित इंडिया रूरल कॉलोक्वी (आईआरसी) 2025 के पाँचवें संस्करण का उत्तर प्रदेश चैप्टर आज लखनऊ विश्वविद्यालय में एक आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से जीवंत ग्रामीण उत्तर प्रदेश के निर्माण के एक सशक्त आह्वान के साथ संपन्न हुआ। इस मंच पर वरिष्ठ नीति निर्माताओं, विचारकों और जमीनी स्तर के प्रतिनिधियों ने युवा उद्यमिता, लचीली आजीविका, महिला-नेतृत्व वाले एफपीओ और ग्रामीण बाजार परिवर्तन सहित प्रमुख विषयों पर विचार-विमर्श किया।

जल योद्धा सम्मान से सम्मानित उत्तर प्रदेश के पद्मश्री उमा शंकर पांडे ने कहा, भारत में दुनिया की 18 प्रतिशत आबादी रहती है, लेकिन मीठे पानी का केवल 1 प्रतिशत ही उपलब्ध है, और हमारी नदियों की संख्या आजादी के समय 10,500 से घटकर आज केवल 500 रह गई है, इसलिए हमें 'खेत का पानी खेत में, मिट्टी भी खेत में' के सिद्धांत के माध्यम से पारंपरिक प्रणालियों को तुरंत पुनर्जीवित करना होगा। जैसा कि रहीम ने कहा है, 'रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून', फिर भी हमारे पास शिक्षा जगत में भी बुनियादी जल साक्षरता का अभाव है। हमें अपनी लड़कियों को शिक्षित करना होगा क्योंकि 'बेटा पढ़ेगा तो एक कुल पढ़ेगा, बेटी पढ़ेगी तो दो कुल पढ़ेंगे', और हमें अपना भविष्य केवल धन से नहीं, बल्कि जल से भी सुरक्षित करना होगा - 'आने वाली संतान को धन नहीं, जल धन दीजिए' - क्योंकि अगला बड़ा संघर्ष तेल के लिए नहीं, बल्कि जल के लिए ही सकता है। संगोष्ठी के प्रमुख सत्रों में युवाओं में उद्यमिता विकास की भूमिका और सीएम-युवा जैसी योजनाओं के माध्यम से युवाओं के नेतृत्व वाले उद्यमों के सशक्तिकरण, विशेष रूप से ग्रामीण महिलाओं और हाशिए के समुदायों के लिए, पर चर्चा की गई। एक अन्य सत्र में महिलाओं के नेतृत्व वाले किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) के माध्यम से मूल्य श्रृंखलाओं को मजबूत करने की आवश्यकता पर बल दिया गया। लखनऊ विश्वविद्यालय के डीन डॉ. अरविंद मोहन ने कहा, भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था, भारत-अमेरिका संबंधों सहित, इसके व्यापार और आर्थिक क्षमता को उजागर करने की कुंजी है। ग्रामीण क्षेत्र भारत की बहु-खरब डॉलर की आकांक्षाओं का एक प्रमुख इंजन है। खराब रसद और भंडारण के कारण अनुमानित ₹2.5-3 लाख करोड़ की कृषि उपज सालाना नष्ट हो जाती है, जिससे सबसे गरीब लोग प्रभावित होते हैं। हालाँकि सुधार 1990 के दशक में शुरू हुए थे, अगले चरण में मानव विकास और ग्रामीण परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए-दूसरी पीढ़ी के सुधारों का समय वास्तव में आ गया है। इस कार्यक्रम में महिला नेताओं और युवा उद्यमियों ने भी भाग लिया, जिन्होंने नवाचार, सामूहिक कार्रवाई और उद्यमशीलता की भावना के माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को बदल दिया है। आईआरसी प्लेटफॉर्म का पाँचवाँ संस्करण ग्रामीण विकास के लिए अंतर-राज्यीय शिक्षा और नवाचार को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस परिचर्चा के दौरान, टीआरआई के एसोसिएट निदेशक, करीम मलिक ने कहा, "परिचर्चा का अर्थ है एक ऐसा संवाद जो सभी संबंधित हितधारकों को जमीनी स्तर के नवाचारों पर विचार करने और यह पता लगाने के लिए एक साथ लाता है कि वे सार्वजनिक नीति को कैसे सूचित और एकीकृत कर सकते हैं।